चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि.भूमि	10.9.22	9	2-8

हकृवि ने विकसित की जई की दो नई किस्में, हरियाणा सहित उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ

एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग : कुलपति

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उतराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उतराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई के लिए अनुशंसित की गई है।

जई की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है जबकि क्रूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म हेल्मिन्थोस्पोरियम लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की क्रूड प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म पाउडरी मिल्ड्यू बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

हिसार। चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्में

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

विकसित किस्मों की मांग बढ़ी : काम्बोज

हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया।

-प्रो. बीआर काम्बोज
कुलपति, हकृवि

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	10.9.22	4	1-2

चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हकृवि ने जई की 2 नई किस्में की विकसित

इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

हिसार, 9 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की 2 नई उन्नत किस्में एच.एफ.ओ. 707 व एच.एफ.ओ. 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एच.एफ.ओ. 707 दो कटाई, जबकि एच.एफ.ओ. 806 एक कटाई वाली किस्म है।

उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एच.एफ.ओ. 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उतराखंड) जबकि एच.एफ.ओ. 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उतराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुशंसित की गई हैं।

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंघटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	10.9.22	3	4-5

एचएयू ने जई की दो नई किस्में विकसित कीं

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्म एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

एचएयू के वाइस चांसलर प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई के लिए अनुशंसित की गई हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	10.9.22	5	1-3

एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग: काम्बोज

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा जई की दो नई किस्में विकसित, विभिन्न राज्यों के किसानों को होगा लाभ

चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

हिसार, 9 सितम्बर (विरेंद्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुशंसित की गई हैं।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया।

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व लजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	10.9.22	2	3-4

एचएयू : जई की नई किस्मों से पशुओं को मिलेगा अधिक प्रोटीन

हरियाणा समेत अन्य राज्यों के किसानों को होगा लाभ

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। एचएफओ 707 व एचएफओ 806 नाम से विकसित की गई इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा अधिक है। साथ ही पाचकता अधिक होने के कारण पशुओं के लिए बहुत अच्छी मानी गई हैं।

जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि केंद्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई के लिए अनुशंसित किया गया है। जई की इन दोनों किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डीएस फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एसके पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

एचएफओ 806 किस्म

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

एचएफओ 707

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल और सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, क्रूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	9.09.2022	--	--

एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशो में भी मांग: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

■ हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा जई की दो नई किस्में विकसित, हरियाणा सहित उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ

प्रवीन कुमार

चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। आज समाज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम है।

जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुमोदित की गई हैं।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है।

उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया।

जई की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 185 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। अधिक क्रूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म हेल्मिन्थोस्पोरियम लीफ ब्लाइट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की क्रूड प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म पत्तों की ब्लाइट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्मे

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंवार, उम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	10.09.2022	--	--

विश्वविद्यालय द्वारा जई की दो नई किस्में विकसित, हरियाणा सहित उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ

हकृवि की विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग : कुलपति

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 9 सितंबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर विजाई हेतु अनुशंसित की गई है।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है जबकि क्रूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म हेल्मिन्थोस्पोरियम लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है ये किस्में इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिसार	10.09.2022	--	--

एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशो में भी मांगः कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसारः चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उतराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उतराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुशंसित की गई हैं।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	09.09.2022	--	--

हिसार : एचएयू वैज्ञानिकों ने विकसित की जई की दो नई किस्में, अन्य प्रदेशों में भी मांग

09 Sep 2022 18:36:47

हरियाणा सहित उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ

हिसार, 09 सितम्बर (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा अनुसंधान से जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ-707 व एचएफओ-806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की कुल किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने शुक्रवार को बताया कि कुल किस्मों को विकसित करने में द्वारा अनुसंधान के वैज्ञानिकों डॉ. दीपक फोगाट, नीलाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एसके पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंघाटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज भारोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

उन्होंने बताया कि कुल दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ-707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ-806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ-707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ-806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई के लिए अनुमोदित की गई हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ-707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है जबकि कुल प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म हेल्मिन्थोस्पोरियम लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया एचएफओ-806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की कुल प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म पाउडरी मिल्ड्यू बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	09.09.2022	--	--

हकृवि ने जई की दो नई उन्नत किस्में विकसित की

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बोले, एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशो में भी मांग

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुशंसित की गई हैं। कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है।

उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया।

जई की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है जबकि क्रूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म हेल्मिन्थोस्पोरियम लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की क्रूड प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म पाउडरी मिल्ड्यू बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्में

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	09.09.2022	--	--

एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशो में भी मांग : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु

अनुमोदित की गई हैं। कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की कच्ची प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म पाउडरी मिल्ड्यू बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	09.09.2022	--	--

देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से होगा लाभ

हकृवि वैज्ञानिकों ने जई की दो नई उन्नत किस्में की विकसित

नभ-छोर न्यूज ›› 09 सितंबर

हिसार। चौधरी चरण हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं।

देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुशंसित किया गया है।

इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्में

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डीएस फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एसके पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

जई की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है जबकि क्रूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म हेल्मिन्थोस्पोरियम लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।